AD EDUXIAN JOURNAL

A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal

Google Scholar Indexing PIF: 1.048(I2OR), 3.125 (IIFS) & 3.8(SJIF)

Vol (3), Issue (3), July-September 2026 *ISSN: 3048-7951*

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रकृतिवादी दार्शनिक चिंतन में निहित तत्वों का अध्ययन

संतोष कुमार सिंह[1] & डॉ. योगेश कुमार[2]

DOI : http://doi.org/10.5281/zenodo.21755905

Review: 05/07/2026 **Acceptance: 08/07/2026** **Publication: 02/08/2026**

शोध सारः : यह शोध पत्र गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के प्रकृतिवादी चिन्तन के प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्तों और उनकी वर्तमान प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय, सद्भावना एवं वसुधैव कुटुम्बकं की भावना की ओर प्रेरित करता है एवं रूसों के प्रकृतिवादी विचारधराओं को आधुनिक सरल प्रकृति की छठां में सीखनें तथा प्रकृति की ओर लौटो, प्रकृति की गोद में रहकर सीखने और रहने की भावना जागृत करती है। टैगोर जी की शिक्षा प्रकृति के अनुरूप अपने को समायोजित करने की ओर उन्मुख करता है।

मुख्यशब्दः प्रकृति सौन्दर्यता, मानवसेवा, राष्ट्रीयता, अन्तर्राष्ट्रीयता, वसुधैव कुटुम्बकं, उदारतो, व्यवहारिकता, बहुमुखी प्रतिभा, स्वदेशी, मातृभाषा, समाजिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, सार्वभौमिकता, विश्वकल्याण

प्रस्तावना

शिक्षा दर्शन की व्याख्या करने में दो शब्द समुच्चयों का प्रयोग किया जाता है–प्रथम शैक्षिक–दर्शन तथा द्वितीय शिक्षा का दर्शन प्रथम उक्ति के अनुसार दर्शन जीवन के विभिन्न पक्षों को स्पर्श करता है तथा शिक्षा भी जीवन का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं, जो दर्शन द्वारा सबसे अधिक प्रभावित होता है। इस मान्यता के अनुसार दार्शनिक सिद्धान्तों एवं मान्यताओं का शिक्षा के लिए जो अभिप्रेतार्थ निकालता है उसका विवेचन किया जाता है। दूसरे शब्दों में शैक्षिक दर्शन, दर्शनशास्त्र की अनुप्रयुक्त शाखा है। इस विचाराधारा के अनुसार व्याख्या के सम्मुख मूल सन्दर्भ दर्शन होता है तथा विचारार्थ बिन्दु शिक्षा के विभिन्न अंग जैसे पाठ्यक्रम, अनुशासन, छात्र आदि होता है। शिक्षा पर समस्याओं का विचार करने के लिए दर्शन की तर्कनापरक विधियों का प्रयोग किया जाता है।

जॉन डीबी के अनुसार, शिक्षा दर्शन, शिक्षा का अपना स्वतन्त्र दर्शन है जिसे हम दर्शन शास्त्र कहते है। उसका उद्भव शिक्षा की ज्वलन्त समस्याओं से हुआ है। वस्तुतः शिक्षा से अद्भुत समस्याओं पर तर्कनापरक विधि से विचार करना दर्शनशास्त्र का काम है न कि दार्शनिक सिद्धान्तों का शिक्षा के लिए अभिप्रेतार्थ निकालना डीवी के अनुसार छात्र की संकल्पना शिक्षा अवसरों की समानता, शिक्षण विधि पाठ्यक्रमत आदि सभी शिक्षा के ऐसे प्रश्न है, जिन पर विभिन्न सिद्धान्त गठित हुए है तथा विभिन्न मतान्तर है। वास्तव में ये सिद्धान्त तथा मत एवं इन पर तर्कनापरक विमर्श ही शिक्षा दर्शन का क्षेत्र है।

[1]शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, संबद्ध: वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत, Email: skspbh230405@gmail.com, मो. नं. 6394772666

[2]सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, शोध निर्देशक, शिक्षा संकाय विभाग, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, संबद्ध: वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

जीवन के लक्ष्य का निर्धारण दर्शन करता है और उस लक्ष्य की प्राप्ति क लिए जीवन के विभिन्न पक्ष प्रत्यत्न करते है। शिक्षा भी सामाजिक जीवन का एक महत्त्वपूर्ण घटक है जो उक्त लक्ष्य की प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण योगदान करती है। इस प्रकार शिक्षा दर्शन के उद्देश्यों को प्रभावित एवं अनुप्रमाणित करता है। दर्शनशास्त्र के ये चिरन्तन प्रश्न है–जगत क्या है? मनुष्य क्या है? ईश्वर क्या है? इसके बीच में पारस्परिक सम्बन्ध क्या है? इन प्रश्नों के उत्तर शिक्षा शास्त्र के लिए बहुत महत्त्व रखते है। दर्शन का तीसरा मूलभूत प्रश्न ज्ञान से सम्बन्धित है। इन प्रश्नों की गहराई में जाकर गवेषणा करता है कि ज्ञान की वास्तविक प्रकृति क्या है?

शिक्षा दर्शन के तीन प्रमुख कार्य है। जिन्हें परिकल्पनात्मक, मानवीय तथा समीक्षात्मक कहा जाता है। परिकल्पनात्मक भूमिका के अन्तर्गत जीवन और जगत के सम्बन्ध में दार्शनिक मान्यताएं तथा परिकल्पनाएँ आ रही है। जिन्हें शिक्षा का आधार बनाया जाता है और जो शिक्षा के सम्पूर्ण क्षेत्र को प्रभावित करती है। मानवीय भूमिका के अन्तर्गत शिक्षा दर्शन के मूल्य निर्धारण सम्बन्ध कार्य आते है। शिक्षा दर्शन शैक्षिक आदर्शों एवं मूल्यों का निर्धारण करता है तथा अच्छी शिक्षा के मापदण्ड का निर्धारण करता है।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर भारतीय प्रकृतिवाद के प्रणेता कहे जाते है। परन्तु भौतिकवादी प्रकृतिवादी की लीक को छोड़कर उन्होंने आध्यात्मिक प्रकृतिवाद का आश्रय लिया। रूसो के ही समान उनके विचारों में तात्कालिक कृत्रिम सामाजिक, परम्पराओं के प्रति एक आक्रोश एवं प्रतिक्रिया दिखाई देती है।

टैगोर की विचारधारा में आदर्शवाद पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित होता है उनका विश्वास है कि प्रत्येक छात्र की प्रकृति की ओर से अनन्त मानसिक शक्ति उपलब्धि हुई है। जीवन की मौलिक आवश्यकताओं की पूर्ति में इस शक्ति का अल्पांश प्रयुक्त होता है और इसके बाद विपुल शक्ति अवशिष्ट रहती है, जिसका उपयोग सृजन के लिए किया जाना चाहिए। शिक्षा का कार्य केवल जीवन यापन की दक्षताएँ प्रदान करना ही नहीं अपितु बालक में निहित उस सृजनात्मक तत्व का विकास करना है। जिससे की जीवन उदात्त, उच्च तथा आनन्दमम बनता है। रवीन्द्र नाथ टैगोर का विश्वास था कि प्रत्येक बालक में एक अद्वितीय प्रतिभा तथा क्षमता रहती है। शिक्षा इस प्रतिभा को विकसित करते ही गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने जीवन दर्शन के विकास के साथ–साथ शिक्षा दर्शन का भी विकास किया। उनके जीवन दर्शन के विकास पर उन तत्वों का प्रभाव पड़ा जो कि सभी प्रकार के प्रगतिशील विचारों एवं कार्यों और विभिन्न राजनैतिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक आन्दोलनों का केन्द्र था।

गुरूदेव ने अपनी तीव्रता एवं विविधता ग्रहण शक्ति का प्रयोग करके स्व–शिक्षा द्वारा ही शिक्षा एवं उसके रहस्यों का अनेक प्रकार से अनुभव तथा ज्ञानार्जन किया गुरूदेव जी पर परिवार के प्रभाव के अतिरिक्त उन पर पश्चिमी देशों के शिक्षा शास्त्रीयों का प्रभाव भी था। रूसो, फ्राबेल, डी0बी0 तथा पेस्टालॉजी के विचारों का प्रभाव उन पर मुख्य रूप से पड़ा जिनका वे 1921 में शान्ति निकेतन की स्थापना से पूर्व अध्ययन कर चुके थे। इसके अतिरिक्त टैगोर ने अपनी तीव्रता बुद्धि द्वारा प्राकृतिक एवं सामाजिक विज्ञानों का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया जिनका उनके शिक्षा

दर्शन में विशेष प्रभाव पड़ा तथा अपने शिक्षा दर्शन के निर्माण में ध्यान में रखा, टैगोर का शिक्षा दर्शन, प्रकृतिवादी दर्शन के अधिक समीप है।

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर का कहना है कि 'सांसारिक झंझटों में फंसने से पूर्व बालाको को अपने निर्माण काल में प्रकृति का प्रशिक्षण करने दिया जाना चाहिए। बच्चों, ब्लैक बोर्ड पुस्तकों एवं परीक्षाओं की अपेक्षा वृक्षों, आकाश का स्वच्द विस्तार, शुद्ध एवं स्वच्छ जलवायु, तालाब का स्वच्छ एवं शीतल जल और प्रकृति का विस्तृत क्षेत्र कम आवश्यक नहीं है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर उच्च कोटि के दार्शनिक एवं शिक्षाशास्त्री थे इन्होंने स्वविवेक, अध्यापक, प्रकृतिवादी, आदर्शवाद, अनुशासन, जिज्ञासा, मानवतावाद, मानव निर्माण, मोक्ष, वसुधैव कुटुम्बकम के आदर्श में विश्वास करते थे। इन्होंने दर्शन को स्पष्ट करते हुए राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र भावना, शिक्षा की एक नई दिशा सुसंस्कृति, सुसभ्यता आदि सभी का अपने दर्शन के माध्यम से स्पष्ट किया है।

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर के शिक्षा दर्शन में एक नई आयाम शिक्षा के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व में भारतीय संस्कृति एवं सुसभ्यता, मानवता, उदारवादी, प्रकृति एवं गीतांजलि को रहस्य का आधार मानकर अपने दर्शन के द्वारा सम्पूर्ण विश्व में शान्ति निकेतन, विश्वभारती आदि समस्याओं की स्थापना करके शिक्षा देने का प्रसस्त प्रयास किया एवं उनका विस्तार भी किया प्रकृति की ओर लौटो, आदर्शवादी प्रकृतिवादी विचारधारा पर विशेष बल दिया तथा सम्पूर्ण विश्व ही परिवार है। हम उसके सन्तानें है। हम सुधरेगे जग सुधरेगा इस भाव को अपने दर्शन में विचार व्यक्त किया है मानव निर्माण का आयाम छोड़ा तथा राष्ट्र की उन्नति का मार्ग एक मात्र, रास्ता शिक्षा है और शिक्षा–दर्शन से ही मानव कल्याण हो सकता है तथा मानवता का पाठ पड़ना उसे अपने जीवन में ग्रहण करना व कराना ही शिक्षा का मुख्य ध्येय है।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा के द्वारा विश्व कल्याण की भावना को रखते हुए उन्होंने राष्ट्रकवि ही नहीं अपितु दर्शन एवं शिक्षाशास्त्री के रूप में भारत की एक नई पहचान बनाया है। वास्तव में भारत, ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार शिक्षा के बिना अपूर्ण है और प्रकृतिवादी दर्शन तथा प्रयोजनवादी दर्शन का केन्द्र मानकर शिक्षा को एक नया आयाम बताया है। वह चाहे दर्शन क्यों न ही रहा हो फिर भी शिक्षा को सर्वोपरि माना है। प्राचीन काल में शिक्षा को तृतीय नेत्र की संज्ञा दी गयी है। शिक्षा के बिना मुनष्य अपने में अपूर्ण है। वह शिक्षा है जो दूसरे को एक नई मार्ग प्रशस्त कर दे तथा मानव मस्तिष्क का उपयोग कर यही नहीं बल्कि शिक्षा का दायित्व मानव मस्तिष्क का निर्माण करना है तथा संवेग उसके सर्वमुखी या चतुर्थमुखी विकास का आयाम है। शिक्षा जगत का एक नई आयाम का बिन्दु स्पष्ट करता है। जो विश्व बन्धुत्व की भावना से मानव कल्याण की ओर प्रेषित करी है।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रमुख शिक्षण विधियां–

गुरूदेव का विचार है कि शिक्षण विधि जीवन की वास्तविक परिस्थितियों समाज के वास्तविकता, जीवन तथा प्रकृति के वास्तविक तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए। प्राकृतिक विज्ञानों का अध्ययन निरीक्षण करके किया

जाये। गुरूदेव लिखते है कि वास्तविक वस्तुओं के सम्पर्क में आने से जो छात्रों के सामने उपस्थित है। उनके निरीक्षण तथा तर्कशक्ति का विकास होता है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने शिक्षा विधि को इस प्रकार से व्यक्त किया है।

1. **शिक्षण विधि जीवन से पूर्ण होनी चाहिएः** उनके अनुसार प्रचलित शिक्षण पद्धति जीवन विहीन होने के कारण रुचिपूर्ण तथा उपयोगी नहीं है। अस्तु शिक्षण पद्धति जीवन से पूर्ण होनी चाहिए उनके अनुसार प्रचलित विद्यालय के शिक्षा केन्द्र न होकर शैक्षणिक फैक्ट्रियाँ होती है। जो बालकों के जीवन की आवश्यकताओं, रूचियों एवं अभिवृत्तियों पर ध्यान दिये बिना एक ही सी सामग्री प्रस्तुत करती है। इन विद्यालयों में बालको के पूर्ण जीवन का विकास नहीं हो पाता ऐसी दशा में गुरूदेव का कहना है कि शैक्षणिक पद्धति बालाकों की स्भाभाविक आवश्यकताओं, रूचियों एवं आवेगों के अनुसार होनी चाहिए।
2. **स्वप्रयास तथा स्वचिन्तन द्वारा सीखनाः** गुरूदेव का विचार है कि वही ज्ञान स्थायी रूप से बालकों के मस्तिष्क में रहता है जो कि स्वयं उन्हें प्रत्यन्तों एवं चिन्तन से प्राप्त हुआ है। शिक्षण विधि में स्वप्रयास तथा स्वचिन्तन को स्थान मिलना चाहिए।
3. **क्रिया द्वारा सीखनाः** गुरूदेव कहते है कि श्हम मनुष्य की शरीर और मस्तिष्क को एक दूसरे से अलग नहीं कर सकते है, जो शारीरिक क्रिया करता है उसका प्रभाव शरीर तथा मस्तिष्क दोंनो पर पड़ता है इनका विचार था कि बालकों को क्रिया द्वारा सीखने के अवसर देना चाहिए इसलिए इन्होंने विद्यार्थियों के लिए किसी न किसी दस्तकारी का सीखना आवश्यक बताया है शारीरिक क्रिया पर महत्त्व देने के कारण बालकों को नृत्य तथा अभिनय सीखने पर बल दिया।
4. **भ्रमण द्वारा सीखनाः** भ्रमण द्वारा सीखने का सिद्धान्त प्रस्तुत करते हुये गुरुदेव ने विचार दिया कि भ्रमण के समय पढ़ाना शिक्षण के सर्वोत्तम विधि है। इन्होंने इसके दो कारण बतायें –
   (क) भ्रमण के समय हमें अनेक वस्तुओं को पृथक रूप से देखकर उसका अध्ययन करने का अवसर प्राप्त होता है।
   (ख) भ्रमण द्वारा हमारी मानसिक क्रियायें सतर्क रहती है, जिसका परिणाम स्वरूप हम प्रत्यक्ष की जाने वाली बातों को सरलता से समझ लेते है इसके विपरीत कक्षा में बालकों को जो शिक्षा प्रदान की जाती है। वह गतिहीन होती है। जिससे उनके मस्तिष्क एवं शरीर दोनों का विकास नहीं हो पाता है।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की वर्तमान भारतीय शिक्षा में प्रांसगिकताः

वे एक प्रतिभा बहुमुखी थे। वे एक महान साहित्यकार, कवि दार्शनिक, समाज सुधारक एवं शिक्षा शास्त्री थे। उन्होंने शिक्षा द्वारा बालाको के शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के साथ उनके आध्यात्मिक उन्नयन पर समान बल दिया। उन्होंने शिक्षा द्वारा समाज सुधार तथा राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय भावनाओं के प्रशिक्षण की आवश्यकताओं पर विशेष बल दिया। इस प्रकार उन्होंने शिक्षा द्वारा व्यक्ति के केवल समन्वित व्यक्तित्व के विकास पर ही बल नहीं दिया वरन् शिक्षा द्वारा एक कल्याणकारी समाज की स्थापना तथा विश्व बन्धुत्व की भावना के प्रसार का भी प्रयास किया। स्पष्ट है कि उन्होंने व्यक्ति समाज तथा विश्व के पुनरूत्थान एवं कल्याण के लिएशिक्षा की कल्पना की इसके लिए उन्होंने ''शान्ति निकेतन'' नामक संस्था की स्थापना की जो आज विश्व भारती के नाम से प्रसिद्ध है। जो संसार के संस्कृतियों एवं सभ्यताओं का केन्द्र है और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास का प्रमुख स्थान है। गुरूदेव पहले भारतीय चिन्तक है जिन्होंने शिक्षा को सामाजिक एवं

बहुउद्देश्यीय प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया और शिक्षा के स्वरूप कि यह समााजिक प्रक्रिया है और उसके कार्य के लिए यह बहुउद्देश्यीय प्रक्रिया है। दोनों का स्पष्ट क्रिया आज संसार के अधिकतर शिक्षाशास्त्र इसी मत के है। शिक्षा के उद्देश्यों को उन्होंने मुख्य रूप से दो वर्गों में बांटा गया है–

1. भौतिक विकास
2. आध्यात्मिक विकास

भौतिक विकास के अन्तर्गत उन्होंने शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं उद्देश्य अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण एवं व्यापक है इन उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उन्होंने एक विस्तृत पाठ्यक्रम की रचना की जिसकी उपयोगिता सर्व विदित है। इसी कारण आज हम पाठ्यक्रम की विस्तृत एवं व्यापक बनाने के प्रत्यनशील है।

गुरूदेव ने विदेशी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा को संकुचित औपचारिक, असाहित्यिक बतलाकर उसका विरोध किया और शिक्षा को भारतीय दर्शन आदर्श, कला , साहित्य एवं सस्कृति पर आधारित किया इस प्रकार उन्होंने भारत क प्राचीन शिक्षात्मक गौरव को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में स्थान दिया, जगत को उनकी यह अनूठी देन है। उन्होंने भाषा के अतिरिक्त अभिव्यक्ति के अन्य माध्यम बतलाये और उनके मध्य ललित कलाओं को प्रमुख स्थान दिया इस दृष्टि से उन्होंने शिक्षा में सौन्दर्यानुभूति पर बल दिया और पाठ्यक्रम में इसकी व्यवस्था की गुरूदेव ही सबसे पहले शिक्षा शास्त्री थे। जिन्होंने कला के शिक्षात्मक महत्व की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया और उससे लाभ उठाया।

शिक्षण के सन्दर्भ में गुरूदेव प्राचीन और अर्वाचीन विधियों के गुण दोष बताने तथा कुछ मूलभूत सिद्धान्तों वास्तविक परिस्थतियों में रहकर इन्द्रियानुभव द्वारा सीखने के अवसर प्रदान करना, मातृभाषा के माध्यम से शिक्षण करना कला को शिक्षण का केन्द्रबनाना, सीखने में बच्चों को स्वतन्त्रता देना तथा उनके साथ प्रेम तथा सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करने पर बल देने तक सीमित रहे। उन्होंने किसी नई शिक्षण विधि का विधान नहीं किया परन्तु उनके इस विचारों की भारतीय विद्यालयों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा है। अंग्रेजी के स्थान पर मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा की बात बुलन्द कर उन्होंने शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने का स्तुत्व प्रयास किया है।

जहाँ तक शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन की बात है। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर उसकी आवश्यकता पर बल देते हुए भी उसकी प्राप्ति के लिए उच्च समाजिक, पर्यावरण और अध्यापकों के आदर्श आचरण को आवश्यक मानते थे। परन्तु यदि कोई छात्र तब भी अन्यथा आचारण करें तब क्या किया जाय, गुरूदेव, प्रेम, सहानुभूति की बात करते हैं। दण्ड व्यवस्था तो होनी चाहिए परन्तु वह प्रेम और सहानुभूति पर आधारित होनी चाहिए बच्चे को इसका एहसास होना चाहिए कि अनुचित आचरण करने पर उसे जो दण्ड दिया जा रहा है। उसकी स्वयं की भलाई के लिए दिया जा रहा है।

शिक्षक और शिक्षार्थी के सम्बन्ध में गुरूदेव के विचार परम्परागत अधिक और अर्वाचीन कम है। आज के भौतिकवाद युग में शिक्षक और शिक्षार्थियों को ब्रह्मचर्य व्रत के पालन, इन्द्रिया, निग्रह, मन, वचन, कर्म से शुद्ध और सादा तथा प्राकृतिक जीवन जीने का चाहे जितना उपदेश दिया जाय, उन पर कोई प्रभाव पड़ने वाला नहीं है। तब उन्हें अपने कर्त्तव्य का निष्ठा से पालन करने की ओर प्रवृत्त करना ही प्रयास होगा।

वे विद्यालयों को भी प्राचीन गुरुकुलों की तरह प्रकृति की सुरम्य गोद में स्थापित करना चाहते थे। पहली बात यह है कि इस युग में यह सम्भव ही नहीं और यदि सम्भव हो तो भी जाय तो फिर वहाँ भीड़ हो जायेगी। एकान्त और शान्त पर्यावरण की बात आज के युग में सोचना कोरी, कल्पना है। गुरूदेव की यह बात अवश्य मानने योग्य है कि विद्यालय राष्ट्र के सच्चे प्रतिनिधि होने चाहिए और अन्तर्राष्ट्रीयता के विकास में सहायक होने चाहिए।

जनशिक्षा और स्त्री शिक्षा का नारा बुलन्द कर गुरुदेव ने डूबते भारत को बचाने का प्रयास किया है। आज प्रयोगों द्वारा यह सिद्ध किया जा चुका है कि शिक्षा पर किया जाने वाला व्यय राष्ट्रीय निवेश है और यह बात तो सर्वविदित है कि एक महिला की शिक्षा का अर्थ है। एक परिवार की शिक्षा। गुरूदेव की इस बात को सभी स्वीकार करते हैं।

धर्म शिक्षा के बारे में गुरूदेव का दृष्टिकोण आज के परिप्रेक्ष्यमें एकदम ग्रहण करने योग्य हैं आज बुद्धि प्रधान युग में धर्म का पूजा पाठ है। धर्म तो वह है जो जनकल्याण के लिए ग्रहण किया जाता है। जिससे मनुष्य, समाज, राष्ट्र और सूचना संसार भौतिक एवं आध्यात्मिक श्री को प्राप्त करना है। गुरूदेव ने मानव सेवा का सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक धर्म के रूप में प्रतिष्ठित कर मानव जाति का बड़ा कल्याण किया है। आज के धर्म निरपेक्ष भारत में धर्म का इसी रूप में स्वीकार करना चाहिए।

रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपने शैक्षिक विचारों को मूर्तरूप् देने के लिए कलकत्ता से 70 किमी0 की दूरी पर बोलपुर नामक स्थान पर शान्ति निकेतन की स्थापना की थी तीन छात्रों से शुरू होने वाले इस शान्ति निकेतन विश्व भारतीय विश्व विद्यालय का रूपधारण कर लिया हैं जहाँ आज हमारे छात्रध्छात्राएँ अध्ययरन है यह पेडों की छाया की स्थान पर ऊँचे विशाल भवनों में लगता है। प्रकृति के सुरम्य्य गोद के स्थल पर वहाँ एक विशाल नगर बस गया है। समर्पित अध्यापक गुरूदेव का स्थान भारी वेतनभोगी अध्यापकों ने ले लिया है। अध्यापक और छात्र सभी स्वरूप अति आधुनिक है। परन्तु इसकी कुछ विशेषताएँ गुरूदेव की याद को ताजी बनाएँ हुए है। वहाँ ललित कलाओं के शिक्षण और विभिन्न कला कौशलों के प्रशिक्षण के लिए अलग से भवन ही अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भाषाओं,धर्म दर्शनों तथा संस्कृतियों की शिक्षा की व्यवस्था है और समाज सेवा तथा ग्रामोत्थान सम्बन्धी क्रिया स्तरों पर अनिवार्य है।

विश्वभारती के अतिरिक्त देश को अन्य सस्थाओं पर टैगोर का प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं दिखाई देता है। परन्तु अप्रत्यक्ष रूप से कुछ प्रभाव अवश्य पड़ा है। आज पूरे देश में शिक्षा का माध्यम महत्त्व मातृभाषा के साथ–साथ राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भाषाओं के शिक्षण की व्यवस्था है। बच्चों को उनके वास्तविक जीवन की क्रियाओं द्वारा सीखने के अवसर प्रदान कर उन्हें समृद्धि सेवा के कार्यों से जोड़ने की ओर भी बढ़ रहे हैं आधुनिक भारतीय शिक्षा को आधुनिक रूप देने के लिए गुरूदेव के चिर ऋणी रहेंगे। डॉ० मुखर्जी के शब्दो में ‘‘टैगोर‘‘ आधुनिक भारत में शैक्षिक पुनरूस्थान के सबसे बड़े पैगम्बर थे, टैगोर विश्व प्रसिद्ध कवि थे। संसार के सभी देशों में उनको आमंत्रित किया गया। फिर वे गये भी उनका दर्शन था–विश्व बन्धुत्व वह हर उस बात को जो मानव के हक में हो उसे विश्व बन्धुत्व का पाठ पढ़ाते हो, अंगीकार कहते है– उन पर निम्न दार्शनिक विचाराधाराओं का प्रभाव पड़ा है। आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रयोगवाद, लोकतन्त्रवाद, मानवतावाद आदि।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के विश्वबोध दर्शनः (1861–1941):

इस युग में महान व्यक्तिव्यों में से एक थे गुरूदेव। ये पहले कवि थे और बाद में दार्शनिक, पी0टी0 राजू का कहना है कि 'वह उन कुछ दार्शनिकों में से एक है जो महान कवि है और इन कवियों में से एक है। जिन्होंने दर्शन को स्वयंमेव अभिव्यक्ति दी है। गुरूदेव का विश्वास था कि संसार के समस्त प्राणियों में परमात्मा व्याप्त है। उनके विचार से अपने और संसार के समस्त प्राणियों में उस परमात्मा की व्यक्ति का अनुभव कर विश्व के समस्त प्राणियों मे एकात्मभाव उत्पन्न हो सकता हैं और यही आत्मानुभूति का सर्वोत्तम मार्ग है उनकी इस विचार धारा को विद्वान विश्वकोष दर्शन की संज्ञा देते हैं।

(अ) विश्व बोध दर्शन की तत्व मीमांसाः गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इस सृष्टि को ईश्वर की व्यकितत्व की अभिव्यक्ति मानते थे। उनके अनुसार ईश्वर द्वारा निर्मित यह जगत उतना ही सत्य है जितना ईश्वर अपने आप में सत्य है। वे प्रकृति के कण–कण में ईश्वर के दर्शन करते थे। ईश्वर को उन्होंने निराकार एवं साकार दोनों रूपों में स्वीकार किया है। आत्मा को वे ईश्वर का अंश मानते थे। उनकी दृष्टि से मनुष्य ईश्वर का ही सर्वोच्च रचना है और उनके जीवन का अन्तिम उद्देश्य अपने आध्यात्मिक व्यक्ति की अनुभूति तथा ईश्वर तत्व को समझना है।

(ब) विश्वबोध दर्शन की ज्ञानपुंज मीमांसाः भौतिक जगत एवं आत्मा–परमात्मा दोनों के ज्ञान को वास्तविक ज्ञान मानते थे और यह जानते थे कि भौतिक जगत् के समस्त पदार्थों एवं प्राणियों में ईश्वर के दर्शन करना ही सच्चा ज्ञान है। यह ज्ञान उनकी दृष्टि से प्रकृति एवं संसार के समस्त प्राणियों के साथ सामंजस्य करके प्रकट किया जा सकता है। गुरूदेव भौकित और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान को समान महत्त्व देते थे उनकी दृष्टि से संसार की समस्त जड़ वस्तुओं और जीवों में एकात्मक भाव ही अन्तिम सत्य है और इसकी अनुभूति ही मनुष्य जीवन का अन्तिम सत्य है। ज्ञान प्राप्ति के साधनों के सम्बन्ध में गुरूदेव ने स्पष्ट किया है कि भौतिक वस्तुओं एवं क्रियाओं का ज्ञान भौतिक माध्यमों (इन्द्रियो) द्वारा प्राप्त होता है और आध्यात्मिक तत्वों (आत्मा–परमात्मा) का ज्ञान सूक्ष्य माध्यमों (योग) द्वारा प्राप्त होता है। सूक्ष्म माध्यमों से इन्होंने प्रेम योग के महत्त्व को स्वीकार किया है।

(स) विश्वबोध दर्शन की आचार मीमांसाः गुरूदेव मानवतावादी व्यक्ति थे। वे मानव को पहले अच्छा मानव बनने पर बल देते थे, ऐसा मानव जो शरीर से स्वस्थ एवं सुन्दर हो और चिन्तन से प्रकृति प्रेम एवं समस्त प्राणियों में एकात्माभाव अनुभव करने वाले हो। मानव सेवा को वे ईश्वर सेवा करते थे। जिनका विश्वास था कि मानव सेवा से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। विश्वबोध दर्शन के तत्व मीमांसा, ज्ञान, मीमासां और आचार मीमांसा के आधार पर उसे निम्नलिखित रूपों में **परिभाषित किया जा सकता हैः–** ''गुरूदेव का विश्वबोध दर्शन की वह विचारधारा है जो एक ब्राह्मण्ड को ईश्वर द्वारा निर्मित मानती है और यह मानती है कि ईश्वर एवं यह पदार्थ जन्म दोनों सत्य है यह आत्मा को परमात्मा का अंश मानती है और यह प्रतिपादन करती है कि मनुष्य जीवन का अन्तिम उपदेश ईश्वर प्राप्ति है जो मानव सेवा द्वारा प्राप्त किया जा सकता है।''

गुरूदेव ने ईश्वर अर्थात ब्रह्म का स्वरूप न स्वीकार करके उसे मानवीकृत माना है तथा ब्रह्म को सार्वभौमिक रूप से व्याप्त माना है। उनका ब्रह्म वैष्ण अद्वैत की भावना पर आधारित है। जिसे

जैसा कि उन्होंने 'रिलीजन ऑफ मैन' मे लिखा है–''हमे उसी प्रकार अनुभव करना चाहिए जिस प्रकार हम प्रकाश का अनुभव करते है।'' उनका कहना है कि ईश्वर को तर्क से नहीं प्रेम और अनुभूति से जानने का प्रयत्न करना चाहिए। गुरूदेव के चिन्तन पर उपनिषदों का व्यापक प्रभाव है।

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर का धार्मिक शिक्षा का समावेशः

धर्म निष्ठ माता–पिता की सन्तान और उसका संसर्ग होने से ठाकुर रवीन्द्र नाथ टैगोर भी धार्मिक भावना से भरे थे परन्तु वह बुद्धिवादी थे। अतः उन्होंने कहॉ कि धर्म के लिए एक उचित स्थान एवं एक उचित वातावरण आवश्यक है जो जीवन को अनुप्राणित कर दे और आत्मा को ऊँचा उठा दे। उनके विचार में धर्म असीम के प्रति अधिक उत्कृष्ट इच्छा है। असीम की आनन्दमयी अनुभूति है। इसलिए हिन्दू तथा अन्य सभी धर्मो की कटु आलोचना की। जहॉ वे तर्कहीनता पर आधारित अन्धविश्वास, क्रिया–कर्म अथवा विभिन्न प्रकार के आडम्बरों पर बल देते है। उन्होनें धर्म शिक्षा लेख में संकेत किया है कि धर्म के लिए न तो मन्दिरों की न तो ब्राह्मण और कर्म की जरूरत है। प्रकृति मानवीय भावना ही हमारे मन्दिर है और स्वार्थ रहित अच्छे कार्य हमारी पूजा है क्योंकि सच्चा धर्म तो अन्तस में होता है और वही बढ़ता है। गुरूदेव ने अपने 'रिलीजन ऑफ मैन' मे लिखा है कि 'सच्ची धार्मिकता तो मनुष्य को मनुष्य के रूप में सहर्ष मानने के मूल्य में होती है।''

अपने धर्म बोध नामक लेख में टैगोर ने धर्म शिक्षा के विषय में विचार प्रकट किये हैं, धर्म शिक्षा के दो पक्ष है एक चरित्र एवं आचरण के परिष्कार जो सत्यानुभूति के लिए अत्यन्त आवष्यक है, दूसरा अपने ज्ञानेन्द्रियों एवं कर्मइन्द्रियों का विकास एवं संस्कार जिससे अनुभवों से सुखानुभूति हो। इन दोनों को मिला कर ही धर्म शिक्षा पूरी होती है। धर्म शिक्षा के लिए गुरूदेव का मत है कि धर्म शिक्षा पूरी होती है।

धर्म शिक्षा का सर्वाधिक शिक्षा बहुत ही व्यैक्तिक होती है। उनके समाने केवल सामान्य एवं अविधिक ढंग की धर्म शिक्षा थी इसलिए शान्ति निकेतन में किसी प्रकार की सम्प्रादायिक शिक्षा अथवा मत विशेष का कर्मकाण्ड नहीं होता और एक विश्व धर्म की भावना होती है। सभी धर्मो के पैगम्बरों के जन्मदिवस मनाये जाते है। प्राकृतिक एवं कला में जो सौन्दर्य और आनन्द मिलता है उसे आध्यात्मिक बोध के लिए प्रेरणा दी जाती है आश्रम में रहकर ज्ञान एवं संस्कृति को प्राप्त करने के लिए जो गम्भीर प्रत्यन किये जाते है, जिससे कर्त्तव्यों की पूर्ति होती है यह धर्म शिक्षा के अन्तर्गत है।

गरीबों की सेवा, अशिक्षितों को पढ़ाना, विभिन्न देश के रहने वालों में मानवीय हार्दिक सम्पर्क में मेल सहयोग से कार्य करना, देश के प्रति अच्छी धारणा, शान्ति निस्तब्धता, उच्चादर्श से पूर्ण वातावरण तथा महात्माओं की भव्यात्मा के प्रभाव की अनुभूति आदि सभी धर्म शिक्षा के साधन है अतः धर्म सम्पूर्ण जीव की साधना है, मानवता की साधना है जिसकी शिक्षा व्यावहारिक एवं अविधिक ढग से दी जा सकती है।

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रकृतिवादी चिन्तन–

प्रकृति को सत्य एवं वास्तविक माना है। प्रकृति एवं प्राकृतिक सौन्दर्य के उपासक रहे है। जब वे प्राकृतिक वातावरण से मुक्त विद्यालय में गये तो उन्हें उसकी अस्वाभाविकृता अनुभव हुई। अतः वे उसके विरूद्ध क्रियाशील हो उठे और रूसो की भाँति पुकार उठे–'प्रकृति की ओर चलो' प्रकृति से उनका साक्षात्कार हुआ जब उनके परिवार का अन्य निवास गंगा के तट पर ही है और उन्होंने अपने पिता के साथ हिमालय का भ्रमण किया उन्होंने प्रकृति से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित करते हुय ष्जब तक मनुष्य अपनी प्रकृति से संसार में बन्द उस कैदी के समान रहता है। जिसे कारागार की दीवार अपरिचित लगती है।ष प्रकृति को वे एक शक्ति का संचित गृह मानते थे। रूसों की भाँति गुरूदेव ने भी कहाँ था कि समस्त आधुनिक सभ्यताएँ ईंट और गारे के पालने में पड़ी है। गुरूदेव की कवि वाणी प्रकृति के सम्बन्ध में हमेशा श्रेणी एक स्थान पर उन्होंने लिखा है– प्रभात का तारा उषा से कहता है कि–''मुझसे कहो कि तुम सिर्फ मेरे लिए हो''।

''उषा उत्तर देती है– 'हाँ और उस नाम हीन फूल के लिए भी''।

समझ के सारे द्वार यही खुलते हैं प्रकृति का मुक्त उपहार थी। वे दार्शनिक थे तो प्रकृति उनका खुला आगन थी, जिससे से स्वच्छन्द विचरे।

गुरूदेव के प्रकृतिवादी चिन्तन में निहित प्रमुख तत्व–

मानववादी दृष्टिकोण : – टैगोर के लिए मनुष्य सर्वोच्च था न कि राज्य या मशीन। वे मनुष्य को ईश्वर का रूप मानते थे और सभी व्यक्तियों के प्रति करूणा व प्रेम को ही सच्चा धर्म मानते थे तथा मानव को सर्वोपरि स्थान दिया है।

प्रकृतिवादी दृष्टिकोण : – गुरूदेव जी शान्ति निकेतन के माध्यम से शिक्षा को चार दीवारी से बाहर प्रकृति की गोद में यानी खुले वातावरण में पेड़ों के नीचे सिखाने का समर्थन किया तथा प्रकृति प्रेमी गुरूदेव जी ने प्रकृति को विशेष स्थान दिया।

रचनात्मक स्वतन्त्रता और अनुभव – टैगोर जी के दर्शन मे शिक्षा से स्वतन्त्रता सबसे महत्त्वपूर्ण थी। वे रहने के बजाय क्रिया, कला, संगीत, नृत्य, और अभिनय के माध्यम से करके सीखने पर बल दिया।

विश्व मानववाद और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद– टैगोर जी ने संकीर्ण राष्ट्रवाद के विरोधी थे। वे विश्व भारती के माध्यम से पूर्व और पश्चिम की संस्कृतियों के मिलन और वैश्विक नागरिकता का समर्थन करते थे तथा वसुधैव कुटुम्बकम की भावना अन्तर्आत्मा में विद्यमान थी तथा विश्व मानववाद से ओत प्रोत थे।

समग्र विकास : – शिक्षा का लक्ष्य केवल बौद्धिक विकास नहीं बल्कि, छात्र का शारीरिक भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से पूर्ण विकसित होना था तथा चतुरमुखी विकास पर विशेष बल दिया जिससे मानव जाति के साथ विश्व का कल्याण एवं समग्र विकास हो सके।

ग्रामीण पुनर्निर्माण : – शिक्षा को व्यावहारिक कौशल से जोड़कर ग्रामीण समाज के उत्थान की प्रगतिवादी सोच के व्यवहार में उतारा जा सके। गुरूदेव का दर्शन व्यक्ति की स्वतन्त्रता को बनाऐ रखते हुए उसे प्रकृति और मानवता से जोड़ने के एक जीवन्त प्रक्रिया है।

गुरूदेव जी शान्ति निकेतन के माध्यम से शिक्षा को अग्रिम आयाम तक पहुँचाने की ओर उन्मुख किया तथा प्रकृति एवं आध्यात्म, नाट्य, नृत्य, संगीत, कला तथा रचनात्मकता का सृजनात्मक ढंग से बालको को विकास हो सके तथा प्रकृति की सौम्य सौन्दर्यता की गोद में रहकर समन्वय बना सके ।

- टैगारे के शान्ति निकेतन के व्यावहारिक प्रयोग।
- रवीन्द्रनाथ टैगोर संगीत का उनके दर्शन में स्थान।
- राष्ट्रवाद पर टैगोर के विचार।
- प्रकुति की गोद में रहकर सीखना।
- करके सीखना।
- प्रकृति के अनुभव द्वारा सीखना।
- मातृभाषा में शिक्षा पर विशेष जोर दिया तथा व्यहारिक शिक्षा पर बल दिया।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा पर बल दिया।
- जन कल्याण की शिक्षा, स्त्री शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया।
- प्रकृति हमारी सबसे बड़ी शिक्षक है।
- प्रकृति के द्वारा ही शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास सम्भव है।
- मानवतावादी दृष्टिकोण
- प्रकृति और शिक्षा
- साहित्य, कला, संगीत, रंगमंच और चित्रकला पर विशेष ध्यान दिया
- रवीन्द्रनाथ टैगोर बालको का पूर्ण विकास कलात्मक अभिव्यक्ति और छात्रों में वैश्विक नागरिकता व मानवता का भाव विकसित करना।
- गुरू एक मार्गदर्शक और एक साथी है, जो अपने आचरण और प्रम से छात्रों को प्ररित करता है।
- शिक्षा का केन्द्र प्रकृति है शान्तिनिकेतन की स्थापना इसका प्रमाण है।
- रटन्ति प्रणाली ओर भारी पाठ्यक्रम का कड़ा विराध किया।
- अनुीाचों से सीखना मुख्य आधार है।
- ग्रामीण पुनर्निर्माण हस्तशिल्प और कृषि आधारित शिक्षा (विश्वभारती)

पं० जवाहर लाल नेहरू, ''शिक्षा सन्तुलित मानव का विकास करती है। शिक्षा के माध्यम से ही हम देश के भावी पीढी को सही दिशा की ओर मोड सकते है''। गुरूदेव के अनुसार, प्रकृतिवाद एक ऐसी शिक्षा है जो हमें प्रकृति के साथ स्वाभाविक और मनुष्य के साथ मानवीय बनने की ओर आकर्षित करती है। परिवेश का सौदर्यपरक पहलू। इसमें समाज भी शामिल है।

टैगोर के अनुसार, अपनी पूर्णता के लिए हमें होना होगा।

प्रकतिवादी दार्शनिक टैगोर जी ने शिक्षा के क्षेत्र, कला, साहित्य, नाटक, नृत्य, संगीत, रचनात्मक कौशल एवं दार्शनिकता और नैतिकता, मानवतावादी, जनकल्याण वादी, आध्यात्मवादी विचार से परिपूर्ण थे और वे सभी

तत्वों पर जोर देते हुए मनुष्य को मनुष्यत्व की ओर विशेष जोर दिया तथा मानवतावादी प्रकृतिवादी प्रगतिवाद अनुभवजन्य, रचनात्मकता, आध्यात्मिकता व नैतिक विकास, वैश्विक एकता, स्वतन्त्रता, आत्मनुशासन से ओत–प्रोत होकर वे सदैव इन तत्वों को शिक्षा में विशेष स्थान दिया और राष्ट्रीयता एवं अतर्राष्ट्रीयता की भावना से सद्भावना की ओर शान्ति के प्रतीक थे।

सदैव अपनी शिक्षा राष्ट्र के प्रति समर्पित रहते थे और उनका मानना था कि हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो निरन्तर गतिशील रहे तथा प्रगति की ओर उन्मूख बनी रहे तथा मातृभाषा से परिपूर्ण रहे। राष्ट्र को सुदृढ़ बना सके। यह तभी सम्भव है, जब हम शिक्षा को एक नया आयाम दे सकें तथा प्रकृति की छठा में रहकर सुदृढ़ शिक्षा प्राप्त करेगे और प्रकृति के उपादेयता को समझ सकेंगे अतः हम राष्ट्र एवं विश्व को कल्याण के लिए तभी आगे बढ़ सकते है। इसलिए हमें सुसंस्कृति, सद्भावना, मानवता, राष्ट्रीयता, सृजनात्मकता, रचनात्मक, प्रकृतिवादी चिन्तन पर बल देने की आवश्यकता है। प्रकृतिवाद के जनक के रूप हमें सर्वप्रथम रूसो का नाम लेते है।

टैगोर जी रूसो के सिद्धान्तों से सामानता एवं उनके चिन्तन से अत्यधिक प्रेरित थे। प्रकृति को विशेष स्थान दिया उनका मानना था कि हमें प्रकृति के अनुसार रहकर कुछ विशेष शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए तथा अपने जीवन में उसे क्रियान्वित करनी चाहिए। टैगोर जी ने इन तत्वो को अपने दर्शन में विशेष स्थान दिया है तथा यहाँ तक कि साहित्य में प्रकृति एवं राष्ट्रीयता को प्रमुख स्थान दिया है।

वास्तव में वे एक उच्चकोटि के दार्शनिक एवं साहित्यकार तथा शिक्षाशास्त्री थे जिनके दर्शन को आधुनिक शिक्षा में एक नया आयाम प्रदान करती है। गुरूदेव जी के चिन्तन पर सबसे अधिक प्रभाव प्राचीन भारतीय चिन्तन का है–उपनिषदों और वेदों का। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा और पालन–पोषण के तरीके नेउनके मन में प्राचीन भारतीय आदर्शों को स्थापित किया। लेकिन कवि ने इस प्रभाव को अमूर्त रूप में स्वीकार नहीं किया।

टैगोर जी का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण समग्र था जो व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास पर केन्द्रित था। उनका मानना था कि शिक्षा से छात्रों को शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक क्षमताओं का विकास करने में सहायता मिलनी चाहिए। टैगोर के अनुसार शिक्षा केवल कक्षा तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसका विस्तार प्राकृतिक वातावरण तक होना चाहिए।

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने इस सृष्टि को ईश्वर की व्यकितत्त्व की अभिव्यक्ति मानते थे। उनके अनुसार ईश्वर द्वारा निर्मित यह जगत उतना ही सत्य है जितना ईश्वर अपने आप में सत्य है। वे प्रकृति के कण–कण में ईश्वर के दर्शन करते थे। ईश्वर को उन्होंने निराकार एवं साकार दोनों रूपों में स्वीकार किया है। आत्मा को वे ईश्वर का अंश मानते थे। उनकी दृष्टि से मनुष्य ईश्वर का ही सर्वोच्च रचना है और उनके जीवन का अन्तिम उद्देश्य अपने आध्यात्मिक व्यक्ति की अनुभूति तथा ईश्वर तत्व को समझना है।

निष्कर्षः –

यह शोध पत्र का निष्कर्ष है कि गुरूदेव की प्रतिभा बहुमुखी थी। वे एक महान सहित्यकार, कवि, नाटककार, महान दार्शनिक, समाज सुधारक एवं शिक्षाशास्त्री थे। उन्होंने शिक्षा के द्वारा बालकों के शारीरिक एंव बौद्धिक विकास के साथ उनके आध्यात्मिक उन्नयन पर समान बल दिया। शिक्षा द्वारा समाज सुधार तथा

राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय भावनाओं के प्रशिक्षण की आवश्यकताओं पर विशेष बल दिया। इसी प्रकार उन्होंने शिक्षा द्वारा केवल समन्वित व्यक्तित्व के विकास पर ही बल नहीं दिया वरन् शिक्षा एक कल्याणकारी समाज के द्वारा मानवता की सेवा करना तथा सद्भावना के विकास का प्रमुख स्थान दिया इसके साथ–साथ उन्होंने प्रकृति की छठां में रहकर सीखने पर बल दिया। वे प्रकृतिवादी चिन्तक एवं अपनी शिक्षा पर प्रमुख स्थान दिया। प्रकृति को सर्वोपरि माना तथा व्यक्ति एवं प्रत्येक जीवन्त प्राणी प्रकृति की गोद में रहकर फलता फूलता है। तथा उससे सीखता है। अतः हमें प्रकृति के आयाम एवं उनके द्वारा प्रदत्त उपहार को आत्मसार करना चाहिए। अपनी शिक्षा में प्रकृति एवं मातृभाषा एवं व्यवहारिकता पर विशेष बल दिया।

सन्दर्भ सूची :

पाठक, पी0 डी0 – भारतीय शिक्षा एवं उनकी समस्याएँ अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा,

पाण्डेय, रामशकल – शिक्षा दर्शन, **छठा संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर,** आगरा।

टैगोर, रवीन्द्रनाथ – शिक्षा समरी, 1986 मारूत प्रकाशन दिल्ली रोड, मेरठ–2

टैगोर, रवीन्द्रनाथ – पर्सनाल्टी बाम्बे, मैकमिलन, 1970

टैगोर, रवीन्द्रनाथ – साधना नई दिल्ली मैकिमिलन, 1979

टैगोर, रवीन्द्रनाथ – रिलीजन ऑफ मैन शान्ति निकेतन विश्व भारती पब्लिकेशन– 1993

कार्नेलियम, जे0जे0 (1930) रवीन्द्रनाथ टैगोर, भारत के स्कूल मास्टर, कोलंबिया विश्वविद्यालय

पाठक, पी0डी0, शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा, 2013

मूललेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर, गीतांजलि, मारूत प्रकाशन दिल्ली रोड, मेरठ –2

पाण्डेय, रामसकल शिक्षा के दार्शनिक सिद्धान्त – अग्रवाल पब्लिकेशन

भारद्वाज प्रो0 ईश्वर, मानव चेतना–सत्यम् पबिलिंशिंग उत्तम नगर नई दिल्ली।

त्यागी गुरूशरण, ज्ञान एवं पाठ्यक्रम, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, उ0प्र0।

लाल बिहारी रमन – समकालीन भारत और शिक्षा विषय और मुद्दे– सूर्या प्रकाशन ।

अग्रवाल जे0सी0 – उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

द्विवेदी रोली – ज्ञान एवं पाठ्यक्रम अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

लाल रमन विहारी भारतीय शिक्षा का इतिहास,विकास एवं समस्यायें– लाल बुक पुस्तक भण्डार सूर्या प्रकाशन मेरठ।

www.eric.ed.Gov.

www.dartmouth.edu

www.cmwikiPedia.org/wiki

www.google.co.in